भाग - 7

कृपाल रूहानी सत्संग भबात में
महाराज जी की प्रत्यक्ष संभाल संबंधी घटनाएं

गुरमीत सिंह सैनी
चण्डीगढ़

हमारा गांव भबात चण्डीगढ़ के पास अम्बाला की तरफ नगर कौंसिल ज़ीरकपुर में स्थित है। इस गांव को हजूर महाराज परम संत कृपाल सिंह जी के दुर्लभ चरण-स्पर्श प्राप्त होने का गौरव प्राप्त है। महाराज जी 9 अप्रैल, 1961 को मास्टर यशपाल वर्मा की शादी के मौके पर इस गांव में पधारे थे। मौजूदा सत्संग आश्रम के स्थान पर ही उनकी कार रुकी थी क्योंकि आगे बीच से ऊंची पुली होने के कारण कार आगे नहीं जा सकती थी। यहां से हजूर महाराज पैदल चलकर बाजार से होते हुए सीधे मास्टर यशपाल के घर गये। फिर उन्होंने गांव के सरकारी स्कूल में सुबह 8.30 बजे एक घंटे के लिए सत्संग प्रवचन फरमाए। इस समय आश्रम में सत्संग के अलावा निःशुल्क होम्योपैथिक डिस्पैंसरी और बुजुर्गों के लिए ऐलोपैथिक डिस्पैंसरी काम कर रही है।

हजूर महाराज जी की दया मेहर से संबंधित कुछ निजी अनुभव नीचे दिए जाते हैं: -

सत्संग आश्रम भबात से संबंधित निजी अनुभव

1. बिजली के करंट से बचाव

एक बार हमने हजूर महाराज संत कृपाल सिंह जी का जन्म दिन सुबह के समय सत्संग आश्रम में मनाना था। यह उस समय की बात है जब सत्संग आश्रम की छोटी चारदीवारी ही हुई थी, कोई कमरा आदि

नहीं बना था तथा बिजली का कोई कनेक्शन उपलब्ध नहीं था। उस दिन बिजली का टैम्परेरी प्रबंध करने के लिए सरदार पिरथी सिंह, नंबरदार के घर से खंभे गाड़ कर बिजली की तार लगानी थी। हम ने मुख्य सड़क के नज़दीक एक लोहे का पाइप गाड़ना शुरू कर दिया। मास्टर यशपाल जी ने पाइप नीचे से पकड़ा हुआ था। जैसे ही दास ऊपर से पाइप हाथ में पकड़ कर ज़मीन में खोदे गये गड्ढे में डालने लगा तो अचानक वह लोहे का पाइप ऊपर जाती हुई बिजली की मेन लाईन से जा टकराया जिससे बम फटने का सा भारी धमाका हुआ। हजूर का करिश्मा कि पीछे से बिजली की लाईन के फ्यूज़ डड़ गये और वह पाइप धमाके के फौरन बाद पता नहीं कैसे मेन लाईन से पीछे हट गया। हालांकि पाइप में वैल्डिंग की तरह निशान पड़ गया परन्तु हमें केवल इतना ही महसूस हुआ जैसे हाथों में चींटियां काट रही हों। हजूर महाराज ने अपनी दया मेहर से ही इस बिजली की दुर्घटना से हम सब को सही सलामत बचाया तथा सत्संग और आश्रम का गौरव बढ़ाया।

2. सत्संग हाल के लिए धन तथा सीमेंट का प्रबंध

सत्संग आश्रम में बड़े हाल कमरे का निर्माण शुरू करने से पहले हम हजूर महाराज के पुराने अभ्यासी सत्संगी बाबा लैहना जी, जो पिंजौर के पास माजरी जट्टां गांव में रहते थे, के पास हुक्म लेने गये। बाबा जी को अपने पास सेवा के जमा हुए रुपये के बारे में सारी हालत बताई। बाबा जी ने हुक्म दिया कि आप हजूर महाराज जी के आगे प्रार्थना कर के निर्माण कार्य शुरू कर दो, यह सारा काम उनका अपना है, वे खुद ही इसको सिरे चढ़ा लेंगे। बाबा जी के पास दास ने अर्ज़ की कि अगर धन के बारे में कोई मुश्किल हमें महसूस होगी तो बिना झिझक आप के पास

आ जायेंगे। बाबा जी ने इस विनती को मंज़ूर कर लिया।

निर्माण का कार्य चलता रहा। हमने चंडीगढ़ के एक सत्संगी भाई से अर्ज़ की कि वह हमें एक हज़ार रुपये उधार दे दें। उन्होंने अर्ज़ प्रवान करते हुए पांच सौ रुपए तुरन्त दे दिये और कहा कि जब भी ज़रूरत पड़े, बाकी पांच सौ रुपये उसी वक्त ले जाना।

पहले हमारा प्रोग्राम आधे हाल कमरे (15 फुट x 20 फुट) पर लेंटर डाल कर पूरी तरह मुकम्मल करने का था परन्तु बाद में कई लोगों की सलाह से प्रोग्राम यह बना कि आधे हाल कमरे को मुकम्मल करने की बजाय सारे हाल कमरे (30 फुट x 20 फुट) पर फिलहाल केवल लेंटर ही डाल दिया जाये क्योंकि इससे लेंटर की मज़बूती रहेगी। यह भी फैसला हुआ कि प्लस्तर और फिनिशिंग का बाकी सारा काम बाद में होता रहेगा। एक भाई को चंडीगढ़ से सीमेंट मंज़ूर करवाने के लिए कहा हुआ था परन्तु आजकल आजकल करते वह मंज़ूर न हो सका (उस समय सीमेंट आजकल की तरह मार्कीट में खुला नहीं बिकता था बल्कि पूर्ण तौर पर सरकारी कन्ट्रोल में था)। उधर जब दास ने चंडीगढ़ के उस सत्संगी भाई जिसने कि और पांच सौ रुपये जब ज़रूरत पड़े देने के लिए कहा था, को बाकी पांच सौ रुपये की रकम देने के लिए विनती की ताकि सीमेंट का प्रबंध किसी और जगह से किया जा सके, तब उस भाई ने साफ कह दिया कि आप को पांच सौ रुपये उस समय ही मिलेंगे जब आप हाल कमरे का प्लस्तर करवाओगे। दास ने अर्ज़ की कि पहले हमारा आधे हाल कमरे को मुकम्मल करने का प्रोग्राम था और उस में प्लस्तर भी करवाना था परन्तु अब तो हम ने पूरे हाल कमरे पर केवल लेंटर डालने की ही योजना बनाई है और प्लस्तर

अभी नहीं करवायेंगे क्योंकि हमारे पास धन की कमी के कारण पूरे कमरे पर लेंटर डाला जाना भी मुश्किल पड़ रहा है। प्लस्तर तो तब ही हो सकता है यदि पहले लेंटर डल जाये। इस सब विनती के बावजूद भी भाई साहब ने पांच सौ रुपये देने से साफ इन्कार कर दिया। अब दास की हालत ब्यान से बाहर हो गई । पास पैसे नहीं, न ही सीमेंट। रविवार (17 जून, 1979) को हम ने लेंटर डालने का निश्चय किया था क्योंकि उस दिन सरकारी छुट्टी होने के कारण अपने भाइयों से लेबर का काम लिया जा सकता था और इस में तीन-चार सौ रुपये मज़दूरी की रकम की बचत हो सकती थी। दास रोता हुआ और हजूर के आगे विनती करता हुआ चंडीगढ़ से अपने गांव की तरफ चल पड़ा। गांव आकर सत्संगी भाइयों को सारी बात बताई। दास का मन कहीं भी नहीं लग रहा था, दम-दम पर हजूर के आगे अर्ज़ हो रही थी और मन में आ रहा था कि हजूर यह तो दास को विश्वास है कि यह काम आप का अपना है और आप खुद ही इसको सही तरीके से सिरे चढ़ा देंगे, इसलिए आप ही दास को इस समय सही रास्ते पर डाल कर सारा इंतज़ाम जल्दी करवा दो। हजूर की दम-दम याद हो रही है। कई दिन से निर्माण के सारे सामान का इंतज़ाम करने में हजूर की याद धीमी पड़ गई थी। रात के करीब 8-9 बजे का समय हो गया था। याद आया कि अभी बाबा लैहना जी के पास माजरी जट्टां नज़दीक पिंजौर के लिए रवाना होना चाहिए। श्री रामचन्द्र जी ने फौरन ही साथ जाना स्वीकार कर लिया। मास्टर यशपाल जी तथा कुछ और सत्संगी भाइयों ने कहा कि रात का समय है और सफर लम्बा है, रात को कहीं स्कूटर खराब हो जाये या कोई और दुर्घटना हो जाये तो....। उस समय दास का मन हजूर की याद

में मगन था, ये वचन इस तरह महसूस हुए जिस तरह हजूर की दया मेहर पर हमारे मन में विश्वास न हो। फौरन ही दास ने विनती की कि जब स्कूटर पर हम बाबा लैहना जी के पास हजूर के अपने ही काम के लिए जा रहे हैं तो हमें डरने की कोई चिंता नहीं होनी चाहिए, वह ताकत सर्वव्यापक है और खुद ही हमारी हिफाज़त करेगी। हम दोनों रात के नौ बजे के करीब चल कर बाबा लैहना जी के गांव माजरी जट्टां लगभग दस बजे पहुंच गये। बाबा जी उस समय घर में अकेले ही थे और जाग रहे थे। उन्होंने हमें बड़े प्यार के साथ अपने पास बिठाया और इतनी रात उनके यहां पहुंचने का कारण पूछा। हमने अर्ज की कि बाबा जी, हमारे पास पैसे खत्म हो गये हैं और अभी हम ने सीमेंट खरीदना है। यह भी हो सकता है कि कोई और चीज़ भी खरीदनी पड़ जाये जिस के लिए हमारे पास पैसे न हों। बाबा जी यह सुनकर बड़े गमगीन हो गये। उन्होंने सोचना शुरू कर दिया कि किस तरह यह मुश्किल हल को सकती है। हमने बाबा जी से प्रार्थना की कि वे हमें कुछ पैसे उन रुपयों में से उधार दे दें जो उन के पास लंगर की सेवा के लिए अकसर इकट्ठे हुए रहते हैं। बाबा जी ने साफ बताया कि इस समय उन के पास सेवा के कोई पैसे इकट्ठे हुए नहीं पड़े क्योंकि जो सेवा के पैसे थे, वे पीछे बीत चुके 2 अप्रैल के भंडारे पर खर्च हो गये हैं। बाबा जी के पास अकसर सेवा इकट्ठी होती रहती थी जिस के द्वारा वे जन्म दिन तथा चोला छोड़ने के सारे भंडारे अपने गांव में निश्चित तारीख को ही मनाते थे। फिर क्या था? हमारी यह आशा भी टूट गई। बाबा जी ने सारी रात हजूर के आगे अर्ज़ करते गुज़ारी। सवेरे उन्होंने हमें अपने पास से तथा गांव के कुछ सत्संगी भाइयों से इकट्ठे कर के

तकरीबन 120 रुपये दिये और कहा कि हजूर ही इस काम को सिरे चढ़ायेंगे। हम वहां से चल कर पिंजौर में मिस्त्री हरी राम जी के पास पहुंचे। वे ड्यूटी पर जाने के लिए तैयार थे। उस समय सवेर के करीब छः बजे थे। उन्होंने इतने सुबह सवेरे उनके पास पहुंचने का कारण पूछा। हमने सारी कहानी उन को सुनाई। उन्होंने पूछा कि आप को इस समय कितने धन की ज़रूरत है। हमने अर्ज़ की कि तकरीबन एक हज़ार रुपये में हमारा काम चल सकता है। उन्होंने बताया कि उन के पास इस समय लगभग बारह – तेरह सौ रुपये कालका सत्संग घर के पड़े हैं, आप जितने चाहें, ले जायें। जब कालका सत्संग आश्रम में हाल कमरा बनाने की जरूरत होगी उस समय वापिस कर देना। हम उसी समय खुशी – खुशी एक हज़ार रुपये लेकर हजूर महाराज की दया मेहर के गुणगान करते हुए अपने गांव भबात वापस आ गये।

अब मुश्किल हमारे सामने थी सीमेंट न होने की । जिस भाई ने चंडीगढ़ से सीमेंट मंजूर करवाने का विश्वास दिलवाया था परन्तु चंडीगढ़ से सीमेंट मंजूर नहीं हुआ था, उस भाई ने बताया कि उसके पास घर में कुछ सीमेंट पड़ा है, वह आप उधार ले जाओ और बाद में वापस कर देना। गांव में से ही श्री मेहर दास शर्मा ने हमें यह आश्वासन दिया कि जितना भी सीमेंट आपको चाहिए वह मुझ से उधार ले जाना क्योंकि अपनी कोठी बनाने के लिए मेरे पास काफी रिजर्व स्टाक पड़ा है। यह हजूर महाराज जी की अपार दया मेहर का करिश्मा है कि जब कि पहले दिन हमारे पास पैसे भी नहीं थे और न ही सीमेंट था, अब अगले ही दिन सीमेंट जरूरत से ज्यादा पड़ा है और पैसे एक हज़ार रुपये हमारे पास फालतू पड़े हैं क्योंकि सीमेंट तो उधार मिल गया था।

3. सत्संग हाल के निर्माण के लिए लोहा बांधने वाले मिस्त्री का प्रबंध

तीसरी घटना हाल कमरे पर लेंटर डालने के लिए लोहे का जाल बांधने वाले लोहार मिस्त्री के बारे में है। हम जाल बांधने के लिए मनीमाजरा (क़रीब 15 किलोमीटर दूर) के एक सरदार मिस्त्री को मिल कर आये थे। वह एक दिन हमारे गांव में जाल बांधने के लिए पहुंचा परन्तु उस दिन हमारी शटरिंग तैयार नहीं हुई थी। इसलिए वह कुछ लोहा काट कर ही वापस चला गया। हमने उससे कहा कि वह हर हालत में 17 जून, 1979 को आने वाले रविवार से दो दिन पहले आकर लोहा बांध दे क्योंकि उस मिस्त्री के अनुसार उसे लोहा बांधने में दो दिन लगने थे। उसने बात मान ली। दास ने रविवार से दो दिन पहले पता किया तो उसने कहा कि वह किसी जगह काम कर रहा है परन्तु शुक्रवार 15 जून दोपहर को एक-दो मिस्त्री और साथ लेकर भबात पहुंच जायेगा। वह शुक्रवार शाम तक भी भबात न पहुंचा। इस तरह शनिवार सवेरे जल्दी ही दास उसके पास पहुंचा तो पता लगा कि अभी भी वह किसी जगह काम कर रहा है। दास उसके काम करने की जगह पहुंचा तो उसने अपनी बेबसी बताई। दास ने उसको बहुत बुरा भला कहा और यह भी कहा कि अगर उसके पास काम नहीं होना था तो उसे पहले ही जवाब दे देना चाहिए था। उस मिस्त्री ने फिर भी शनिवार दोपहर 2 बजे तक एक मिस्त्री को और साथ लेकर पहुंचने का वायदा किया। दास उसके बाद दफ्तर ड्यूटी पर चला गया। शाम को छुट्टी के बाद 5-6 बजे भी दास के मन में ख्याल आया कि अब तो 2 की बजाय 6 बज गये हैं, वह शायद पहुंच गया होगा परन्तु जब दास वापस गांव आश्रम में पहुंचा तो यह देख कर बड़ा दुख हुआ कि अब शनिवार

की शाम हो चुकी है और रविवार को हमारा लेंटर डालने का प्रोग्राम है क्योंकि जैसे पहले जिक्र किया जा चुका है उस दिन हमें लोगों के दफ्तरों से छुट्टी होने के कारण काफी लेबर मुफ्त मिल जानी थी, परन्तु जाल बांधने वाला भाई शनिवार शाम तक भी नहीं आया और इतना लोहा बांधने के लिए उसे दो दिन लगने हैं। दास ने उसी समय श्री गुरमीत सिंह सुपुत्र श्री शंभा सिंह जो कि उस समय हमारे पास आश्रम में राज मिस्त्री का काम कर रहा था, को साथ लिया और तुरन्त भबात से एक-दो किलोमीटर की दूरी पर लोहगढ़ गांव पहुंचे जहां लोहा बांधने वाला एक और भाई रहता था। पता लगा कि वह भाई शादी में कहीं बाहर गया हुआ है। इसके बाद हम फौरन छत्त गांव जो कि वहां से करीब 6-7 किलोमीटर की दूरी पर है, पहुंचे जहां पर एक और जाल बांधने वाले का पता लगा था। वहां जाकर पता चला कि वह मिस्त्री बनूड़ (दूरी 8-9 किलोमीटर) किसी काम के लिए गया हुआ है। छत्त गांव में श्री फकीर चंद जी तथा दूसरे और सत्संगी भाइयों ने चाय पीने के लिए कहा परन्तु हम ने उन्हें यह कह कर साफ इन्कार कर दिया कि हमें इस समय सिवाय लोहा बांधने वाले मिस्त्री के कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा। हम फौरन ही अपने गांव भबात वापस आ गये। तब दूसरे मिस्त्री संत सिंह, जो हमारे पास राज मिस्त्री का काम कर रहा था, ने कहा कि उसके गांव बसी (नज़दीक बनूड़-फासला करीब 20 किलोमीटर) में लोहा बांधने वाला एक भाई रहता है। यह सुनकर दास फौरन ही उस के गांव के लिए रवाना हो गया। बनूड़ से पहले एक फार्म पर जहां पर वह लोहा बांधने वाला मिस्त्री काम करता था, से पता करने पर मालूम हुआ कि वह छुट्टी कर के वापस अपने गांव बसी नज़दीक

बनूड़ चला गया है। हम फौरन उस के गांव पहुंचे। मिलने पर उस मिस्त्री ने साफ जवाब दे दिया क्योंकि उस का इकलौता बेटा सख्त बीमार था। बनूड़ से भी कोई मिस्त्री नहीं मिला। तब हम उसी समय वापस अपने गांव भबात की तरफ चल पड़े। यह सारी चक्करबाज़ी शनिवार शाम के 6 बजे के बाद की है। रात 9 बजे के करीब हम फिर लोहगढ़ गांव होते हुए छत्त गांव दोबारा पहुंचे । इतने में छत्त गांव में रहने वाला लोहा बांधने वाला मिस्त्री पहुंच चुका था परन्तु उस ने बताया कि उस को इतना लोहा बांधने में कम से कम दो दिन लगेंगे और वह बीस रुपये प्रति क्विंटल लेगा। मिस्त्री फकीर चंद जी ने सलाह दी कि उस से यह काम न करवाया जाये क्योंकि एक तो उस के रेट बड़े ऊंचे हैं, दूसरे वह कल रविवार को लेंटर डालने के लिए काम तैयार नहीं कर सकेगा। हम कल सवेरे ही बसी (नज़दीक बनूड़) जहां पहले हम गये थे,वहां से एक दो मिस्त्री ले आयेंगे। दास ने अर्ज़ की कि वहां फलां मिस्त्री के पास तो हम जा कर आए हैं, उसका लड़का बीमार होने के कारण वह नहीं आ सकता। फकीर चंद जी के भाई ने बताया कि वे दो मिस्त्री हैं और उस के साथ छत्तबीड़ चिड़िया घर में काम करते हैं। फैसला यह हुआ कि अब क्योंकि रात के करीब 10 बज चुके हैं, यहीं छत्त गांव में ही आराम किया जाये, सुबह सवेरे मिस्त्री को ढूंढने के लिए बसी (नज़दीक बनूड़) को चल पड़ेंगे।

सारी रात सोच में हजूर के आगे प्रार्थना करते गुज़री कि हजूर अब अगर रविवार को लेंटर न पड़ा तो हमारे तीन चार सौ रुपये लेबर के फजूल में खर्च हो जायेंगे। हजूर की दया मेहर से दिल में कभी कभी यह विचार भी आ जाता था कि क्योंकि यह हजूर का अपना काम है,

महाराज जी शायद इस को समय सिर सिरे चढ़ा दें परन्तु बाद में ख्याल आता कि अब तो रविवार की सुबह होने वाली है और यदि दो मिस्त्री भी जाल बांधने वाले मिल जायें तो सारे रविवार के दिन में सरिया नहीं बांधा जा सकता। चलो, जो हजूर की मौज, उनका अपना काम है, वही सिरे चढ़ायेंगे।

रविवार 17 जून 1979 तड़के दास श्री फकीर चंद के भाई के साथ गांव बसी पहुंचा तो पता लगा कि वह लोहा बांधने वाला मिस्त्री खेत में काम करने के लिए चला गया है और साथ यह भी पता चला कि आज ही उन के किसी नज़दीकी रिश्तेदार की शादी है, इस लिए वह आप के काम के लिए नहीं जा सकेगा। खैर उस को संदेशा भेज कर बुलाया गया। फकीर चंद जी के भाई ने उस को सारी बात सुनाई और कहा कि यह काम किसी भी कीमत पर अभी करना है। हजूर महाराज की अपार दया से वह एक और हैल्पर समेत तैयार हो गया और उसने बताया कि उस का सामान गांव के दूसरे मिस्त्री के पास, जिस ने पहले हमारे साथ जाने से यह कह कर न कर दी थी कि उस का इकलौता पुत्र सख्त बीमार है, पड़ा है। यह नया मिस्त्री हमें साथ लेकर उस के पास सामान लेने के लिए गया और इस नये मिस्त्री ने काफी मिन्नत कर के उस पहले मिस्त्री को भी साथ जाने के लिए राज़ी कर लिया। इस प्रकार दास तीन जाल बांधने वाले मिस्त्रियों और श्री फकीर चंद जी के भाई जो कि राज मिस्त्री का काम करते हैं, समेत तकरीबन सवेरे 9 – 10 बजे गांव भबात में वापस आया और उन मिस्त्रियों ने फटाफट अपना काम शुरू कर दिया। थोड़ी ही देर में क्या हुआ कि मनीमाजरे वाला मिस्त्री भी एक और बंदे समेत पहुंच गया।

देखो हजूर महाराज की दया मेहर का करिश्मा कि कहां जाल बांधने वाला एक भी मिस्त्री नहीं था और कहां रविवार सुबह दस बजे हमारे पास पांच छ: मिस्त्री हैं। इसके बाद लोहगढ़ वाला मिस्त्री भी जाल बांधने के लिए आया जिस को हमें न करनी पड़ी।

सब ने मिलजुल कर सारा दोपहर काम कर के 3 बजे जाल पूरी तरह बांध कर तैयार कर दिया। इस तरह हजूर महाराज की दया मेहर से रविवार 17 जून 1979 को पांच बजे लेंटर डालने का काम शुरू हो गया जो रात दस बजे तक पूर्ण तौर पर मुकम्मल हो गया। हजूर ने अपनी दया कर के लेबर के तीन चार सौ रुपये बचा दिये जो कि रविवार को लेंटर न पड़ने के कारण हमें दिहाड़ियों के देने पड़ने थे। यह है हजूर महाराज की दया का प्रत्यक्ष प्रमाण।

4. <u>नारायणगढ़ सत्संग जाते समय टेप रिकार्डर का बचाव</u>

एक बार हम (दास और श्री राम चन्द जी) अपने गांव से नारायणगढ़ सत्संग प्रोग्राम पर जा रहे थे। हमारे पास आहूजा का टेप रिकार्डर लकड़ी के बक्से में फिट स्कूटर के कैरियर पर बंधा हुआ था। उस समय हमें स्कूटर पर समान बांधने का खास तजरबा नहीं था। स्कूटर करीब 50 किलोमीटर की स्पीड से जा रहा होगा कि अचानक टेप रिर्काडर कैरियर पर से निकल गया और 'ठाह' कर के पक्की सड़क पर जा गिरा। ऐसा महसूस हुआ कि शायद स्कूटर का कुछ टूट गया है। जब दास ने पीछे मुड़ कर देखा तो टेप रिकार्डर बक्से समेत सड़क पर घिसटता हुआ नज़र आया। तुरन्त ही स्कूटर रोका। दिल एक दम कांप गया कि टेप रिकार्डर तो बिल्कुल ही खत्म हो गया होगा

क्योंकि यह एक बड़ी नाज़ुक चीज़ होती है। टेप रिकार्डर उठाया गया तो बक्से पर कई रगड़ें नज़र आईं। सोचा कि चलो चलें, सिरे पहुंच कर बिजली पर चला कर टेप रिकार्डर चैक करेंगे, इसके सही सलामत होने की तो अब आशा नज़र नहीं आती। यह एक खास हजूर की दया है कि ऐसे मौकों पर वे अपनी याद से मन को मगन कर देते हैं और दम-दम पर यही अर्ज़ होती है कि हजूर यह आप के सत्संग की चीज़ है, आप ही कृपा कर के सलामत रख सकते हैं। हम अज्ञानी और मूढ़ जीव अपनी समझ के मुताबिक तो चीज़ को सही रखने की कोशिश करते हैं परन्तु इस बात का हमें उस समय बिल्कुल ही पता नहीं होता कि कब दुर्घटना होनी है। कभी दिल में आता कि क्या नारायणगढ़ वाले सत्संगी भाई टेप रिकार्डर से हजूर का सत्संग सुन सकेंगे क्योंकि उन दिनों वहां सत्संग का कोई टेपरिकार्डर नहीं था (उस समय टेप रिकार्डर बहुत कम होते थे)। हजूर आप ही दया करो और जब भी हम इस को चला कर देखें तो इसको सही सलामत निकालना । इस तरह विनती करते हुए हम नारायणगढ़ पहुंच गये। दास ने भाइयों से अर्ज़ की कि टेप रिकार्डर को थोड़ा ठीक करना है, इस लिए एक पेचकस और एक सन्नी दी जाये। दास ने इस टेप रिकार्डर को उससे पहले कभी खोला नहीं था और इस के नुक्स से बिल्कुल अनजान था। हजूर का सिमरन कर के जब काम शुरू किया गया तो टेप रिकार्डर दो चार मिनटों में ही ठीक चलने लगा। हजूर की मेहरबानी से सारे बहन-भाइयों ने सत्संग सुना और उनका शुक्राना किया। यह हजूर की दया और संभाल का साकार नमूना नहीं तो और क्या है।

5. गांव गंडेयां खेड़ी के बस स्टाप पर रह गये हार्न की रक्षा

एक बार श्री राम चन्द जी के जद्दी गांव गंडेया खेड़ी (नज़दीक राजपुरा) में सत्संग का प्रोग्राम रखा हुआ था। शाम को सत्संग हुआ। अगले दिन सवेरे राजपुरा टाउन में हजूर का जन्म दिन मनाने का प्रोग्राम था। हमने सत्संग के सामान समेत वहां पहुंचना था। संगत के करीब आठ-दस भाई सवेरे ही सारा समान टेप रिकार्डर आदि लेकर गंडेया खेड़ी बस स्टाप पर पहुंच गये। वहां कुछ समय बाद बस आई जिस में सामान चढ़ाया गया। उस समय एक भाई ने दास को कहा कि टेप रिकार्डर तो आप के पास है परन्तु बाकी सामान किस के पास है। दास ने कहा कि बाकी सामान दूसरे भाइयों के पास है जो अगले दरवाजे से बस में चढ़े हैं। जब दास ने बस में सामान चढ़वाया तो नीचे सड़क पर और कोई बकाया सामान नज़र नहीं आया। बस चल कर राजपुरा बस अड्डे पर पहुंच गई। वहां से एक सत्संगी भाई के मोटर साइकिल पर चढ़ कर सत्संग स्थान पर पहुंच गये। जब सारे बहन-भाई वहां पहुंच चुके तो देखा कि हार्न वाला थैला किसी के पास नहीं था। जिस भाई के बारे में दास को ख्याल था कि अगले दरवाजे से उस ने थैला बस में चढ़ाया है, उस से पूछा गया तो उस ने बताया कि कोई भी थैला उस के पास नहीं था। दास को फिर भी विश्वास न आया। एक मोटर साइकिल वाले भाई को राजपुरा बस अड्डे भेजा गया कि उस भाई से हमारा सामान बस में रह गया है। वह मोटर साइकिल वाला भाई बस अड्डे शिकायत लिखवा के आ गया क्योंकि वह बस उस समय तक अड्डे में से अगले रूट पर निकल चुकी थी। हजूर की मेहरबानी से दम-दम पर उनके आगे प्रार्थना का वही सिलसिला शुरू हो गया कि हजूर आप खुद

ही हमारे जैसे गुनहगार भुलक्कड़ बच्चों की गलतियों पर पर्दा डाल कर अपने सत्संग के सामान की रक्षा करो, सत्संग फंड में इस समय दोबारा सामान खरीदने के लिए कोई पैसे नहीं हैं। सत्संग का प्रोग्राम शुरू हो गया परन्तु मन में ये ख्याल जारी रहे। थोड़ी ही देर में सरदार शमशेर सिंह जी और सरदार धर्म सिंह धनौनी वाले हमारे पास पहुंचे और कहा कि लो जी संभालो सत्संग का हार्न वाला थैला। दास का मन बहुत खुशी और हजूर के शुक्राने से भर गया। उन्होंने फिर हार्न के मिलने की कहानी बतानी शुरू कर दी। उन्होंने कहा कि आप के चलने के दो घंटे के बाद वे गंडेयां खेड़ी से रवाना हुए और फिर बस स्टाप पर पहुंच गये जहां और भी कई सवारियां बैठी थीं। श्री धर्म सिंह शौचालय को चले गये। कई सवारियां अड्डे पर आती रहीं, बसों पर चढ़ती और उतरती रहीं। अब बस स्टाप पर केवल हम दो आदमी (धर्म सिंह और शमशेर सिंह) ही रह गये। फिर एक बस आई, इशारा किया तो बस रुक गई। अगले दरवाजे से एक सरदार उतरा और पिछले दरवाजे से हम दोनों बस में चढ़ने लगे। उस सरदार ने हमें कहा कि आप का कोई थैला नीचे रह गया है। हम ने अपने हाथों में पकड़ा सामान देखा और फौरन ही कह दिया कि हमारा कोई भी सामान नीचे नहीं रहा। कंडक्टर ने सीटी बजाई, बस चल पड़ी। नीचे उतरे सरदार ने थैला उठाया और चल दिया। अचानक मेरी (शमशेर सिंह की) नज़र उस थैले पर पड़ी और देखा कि यह तो सत्संग का हार्न वाला थैला है। कंडक्टर को फौरन बस रोकने की विनती की, बस रुक गई। मैं (शमशेर सिंह) दौड़ता हुआ उस सरदार के नज़दीक गया और कहा कि यह थैला तो हमारा है। उसने कहा कि पहले तो आप कह रहे थे कि आप का कोई सामान नीचे नहीं

रहा। मैंने अर्ज़ की कि यह सत्संग का सामान है, हमारे से पहले आगे गये भाई भूल गये हैं, देखो तो इस में हार्न है। उसने फौरन ही हार्न वाला थैला मेरे हवाले कर दिया। इस प्रकार मैं थैला लेकर बस में बैठ कर राजपुरा पहुंच गया और ख्याल आ रहा था कि उनके पास हार्न न होने के कारण परेशानी हो रही होगी और सत्संग के काम में विघ्न पड़ रहा होगा। बस स्टाप पर दो घंटे के समय में कितनी ही सवारियां आई होंगी परन्तु समझ नहीं आती सत्संग का यह थैला किस तरह हजूर ने सब की नज़रों से छिपा कर रखा और खुद सरदार शमशेर सिंह को भी बीस-पच्चीस मिनट तक यह थैला नज़र न पड़ा।

6. मुंडी खरड़ के पास स्कूटर से गिर पड़े हार्न व टेप रिकार्डर की संभाल

ऊपर बीती घटना के एक हफ्ते बाद आये रविवार को हजूर महाराज के प्यारे सत्संगी मास्टर सुखदेव सिंह जी के चलाना कर जाने के कारण मुंडी खरड़ में (हमारे गांव भबात से करीब 35 किलोमीटर दूर) सत्संग रखा गया था। हमें वहां खास तौर पर सत्संग में शामिल होने के लिए बुलाया गया था। दास अपनी धर्म-पत्नी के साथ स्कूटर पर सत्संग का सामान बांध कर सत्संग में शामिल हुआ। सत्संग का प्रोग्राम सही सलामत समाप्त हुआ। हमने उसी तरह स्कूटर पर पीछे सामान बांधा और वापस चल पड़े। थोड़ी दूर पर एक गहरा गड्ढा था। दास ने धीरे कर के स्कूटर निकाल लिया और अपने गांव की तरफ मेन रोड पर तकरीबन चार-पांच किलोमीटर आगे निकल गये। अचानक घरवाली ने कहा कि टेप रिकार्डर का बैग नीचे गिर पड़ा है। दास स्कूटर रोक कर पीछे पहुंचा। टेप रिकार्डर वहां पड़ा था परन्तु उस के ऊपर जो हार्न वाला थैला बांधा हुआ था वह वहां नहीं था। सोचा कि कुछ फासला

पहले गिर पड़ा होगा। घरवाली को वहीं पर खड़ा कर के स्कूटर पर दास उस थैले की तलाश में वापस मुंडी खरड़ की तरफ चल पड़ा। रास्ते में कई प्रकार के ख्याल मन में आते रहे। कभी हजूर के आगे अर्ज़ शुरू होती कि हजूर आप की चीज़ है, आप ही इस की संभाल करना। फिर ख्याल आता कि शायद इस ने एक हफ्ता पहले राजपुरा ही गुम हो जाना था, केवल आज का सत्संग का प्रोग्राम सिरे चढ़ाने के लिए हजूर महाराज ने इस को उस दिन गुम होने से बचा लिया होगा। कभी विचार उठता कि शायद अभी कहीं से मिल जाये। इस तरह सोचता हुआ दास वहां पहुंचा जहां मुंडी खरड़ वह ऊंचा-नीचा गड्ढा था परन्तु हार्न का कहीं पता नहीं चला। आखिर दास वापस चल पड़ा। कभी मन में आता कि हमारे हजूर की सत्संग के सामान के बारे में अत्यंत संभाल है, हार्न वाला थैला मिल जाना चाहिए परन्तु अब मिलने वाली कोई हालत भी तो नज़र नहीं आती क्योंकि अब दास सब जगह ढूंढ कर वापस ही तो चल पड़ा है। फिर कभी हजूर के आगे अर्ज़ जारी हो जाती कि हजूर आप सब कुछ कर सकते हैं। अगर यह सामान न मिला तो हो सकता है कि पैसे की कमी के कारण दोबारा हार्न खरीदना मुश्किल हो जाये। इन्हीं ख्यालों में दास वापस घरवाली के नजदीक पहुंच गया और दूर से देखा कि एक आदमी उस के पास खड़ा है। पास पहुंचने पर घरवाली ने पूछा कि क्या हार्न मिल गया है? दास ने कहा, "नहीं।" घरवाली कहने लगी कि ये भाई साहब जो यहां खड़े हैं, कहते हैं कि इन्होंने हार्न मुंडी खरड़ म्यूंनिसिपल कमेटी की चूंगी की चौकी में संभाल कर रखवाया है और कहते हैं कि वहां से ले लो। दास की खुशी की हद न रही। फौरन ही उस आदमी को साथ लिया और चूंगी की तरफ चल पड़े।

दास को उस भाई ने बताया कि जब आप मुंडी खरड़ से निकले ही थे तभी आप का थैला गिर पड़ा था। मैंने आप को कई बार आवाज़ दी परन्तु आप को सुनाई नहीं दिया। आप लगातार चलते गये। मैंने सोचा कि अब सामान कैसे आप के पास पहुंचाऊं। एक बैलगाड़ी वाला कहने लगा कि मुझ को दे दो, मेरा घर नज़दीक ही है, वे लोग मेरे पास से ले लेंगे परन्तु मैंने उस को नहीं दिया । मैं फिर चूंगी वाले के पास पहुंचा, तब उस ने मुझे एक ट्रक पर चढ़ाया और हार्न मैं वहां ही रख आया हूँ। ट्रक भी थोड़ी दूर आ कर ईंट के भट्ठे की तरफ साईड में मुड़ गया और उसके बाद मैं पैदल चलता हुआ आप की घरवाली के पास पहुंचा। जब आप वापस हार्न ढूंढने के लिए मुड़े थे तब भी मैंने आप को कई इशारे किये परन्तु आप को पता न चला। हार्न चूंगी से उठा कर हम वापस चल पड़े तो रास्ते में ख्याल आया कि इस भाई को कैसे किसी बस अड्डे तक पहुंचाया जाये। अगर दास खाली होता तो फिर कोई बात नहीं थी। हम जब हार्न लेकर वहां पहुंचे जहां घरवाली खड़ी थी तो उस भाई को दस रुपये इनाम के तौर पर देने की कोशिश की। वह इन्कार करता रहा कि मैंने नहीं लेने, यह चीज़ तो आप की थी, आप को मिल गई है। मैं किसी देवी के दर्शन कर के आ रहा हूँ, वहां मेरे किसी ने पचास रुपये निकाल लिये हैं और मैं किराये के लिए पैसे न होने के कारण पैदल ही चला आ रहा हूं तथा मैंने मनीमाजरे पहुंचना है। दास ने उस भाई को जबरदस्ती वे दस रुपये दे दिये और कहा कि आप यही समझना कि आप को पचास रुपये में से दस रुपये वापस मिल गये हैं। इतने में ही एक भाई जो मुंडी खरड़ सत्संग सुन कर साइकिल पर आ रहा था, हमारे पास रुका और वहां खड़े होने का कारण पूछा। दास ने सारी कहानी कह सुनाई

और उस भाई को अर्ज़ की कि आप इस भाई को साइकिल पर बिठा कर रास्ते में किसी बस स्टाप पर छोड़ देना। यह है हजूर महाराज की संभाल की एक और साकार घटना जो दास के साथ पेश आई। हजूर ने अपने सारे सामान की रक्षा के साथ साथ यह छोटा सा ख्याल कि उस भाई को कैसे बस अड्डे तक पहुंचाया जाए, उस साइकिल वाले भाई को भेज कर पूरा कर दिया। हम हजूर की अपार दया मेहर का शुक्राना करते हुए खुशी खुशी हम अपने घर को आये।

मानव केन्द्र के निर्माण कार्य से संबंधित घटनाएं

7. श्री ख्याल दास द्वारा सेवा में कम पैसे देने पर दिल रखना

1970 – 71 में जब मानव केन्द्र देहरादून में निर्माण कार्य चल रहा था तो श्री ख्याल दास जी के साथ मुझे भी वहां जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सेवा का काम चलता रहा। एक दिन शाम के समय हम हजूर महाराज जी से उनके निवास पर मिलने के लिए गये। मैंने कुछ सेवा हजूर महाराज को दी। थोड़ी देर बाद श्री ख्याल दास जी ने महाराज जी को पांच रुपये सेवा के लिए दिये। उसके मन में यह ख्याल आ रहा था कि सेवा के ये पैसे बहुत कम हैं। तुरन्त ही महाराज जी ने कहा कि आप ने मुझे ये पांच रुपये दिये, मेरे लिये पांच लाख के बराबर हैं। ख्याल दास जी के मन को तसल्ली हुई। फिर महाराज जी ने दोबारा कहा कि भाई, ये पैसे आप ने मुझ को दे दिये? ख्याल दास जी ने कहा कि हां महाराज जी। महाराज जी कहने लगे कि ये अब मेरे हो चुके? ख्याल दास जी ने कहा कि हां महाराज जी। महाराज जी ने फिर आगे कहा कि मैं इन पैसों का अब जो कुछ मर्जी हो, करूं और जिस को मर्जी हो, दे

दूं? ख्याल दास जी ने कहा कि हजूर जैसी आप की मर्जी। हजूर ने आगे लम्बा हाथ फैलाया और कहा कि लो पकड़ो ये रुपये। ख्याल दास जी की आंखों से बरबस आंसू निकल गये। साथ बैठी ताई जी (बीबी हरदेवी) ने हजूर को कहा कि हजूर वह रो रहा है, आप ये सेवा के पैसे रख लीजिए। फिर हजूर ने वे रुपये सेवा के लिए रख लिये।

8. देहरादून मानव केन्द्र सरोवर के निर्माण के समय ट्रैक्टर ड्राइवर व बच्चे की रक्षा

मानव केन्द्र में सरोवर के निर्माण के समय ट्रैक्टर चल रहा था जिससे एक तरफ से मिट्टी खींच कर नीचे की साईड में ऊंची दीवार बनाई जा रही थी। ज़मीन से ट्रैक्टर करीब 5-6 फुट ऊंचे पर चल रहा था। उस समय सुबह के करीब दस बजे का समय होगा। रिवाज के मुताबिक चने और गुड़ संगत को बांटे गये। सारी संगत थोड़ी देर आराम से बैठ कर चने और गुड़ खा रही थी। ट्रैक्टर पर ड्राइवर के साथ दस-बारह साल का एक बच्चा भी बैठा था। ड्राइवर ने ट्रैक्टर खड़ा किया और प्रशाद खाने लगा। बच्चे ने भी प्रशाद लिया। थोड़ी देर में बच्चे ने अचानक ट्रैक्टर के साथ कोई छेड़छाड़ कर दी। देखते ही देखते ट्रैक्टर मिट्टी की उस दीवार से नीचे लुढ़क गया और बिल्कुल उलटा हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा। देखिए, हजूर महाराज का करिश्मा कि न तो बच्चे को कोई खरोंच आई और न ही ड्राइवर को कोई चोट आई। बड़े अचंभे की बात है कि ट्रैक्टर 5-6 फुट नीचे ज़मीन पर उलटा पलट जाये और उसके सवारों को एक खरोंच तक न आये। ट्रैक्टर को दूसरे ट्रैक्टर के साथ बांध कर वर्कशाप ले जाया गया। दूसरे

दिन ट्रैक्टर ड्राइवर मिला तो दास ने उससे पूछा कि भाई ट्रैक्टर में क्या खराबी आई थी। उस भाई ने बताया कि ट्रैक्टर में बिल्कुल कोई खराबी नहीं थी, केवल साइलेंसर में मिट्टी भर गई थी, सर्विस करने पर ट्रैक्टर बिल्कुल सही सलामत हो गया। यह भी हजूर महाराज की संभाल की एक अजीब घटना है।

हजूर महाराज की दया मेहर की फुटकल घटनाएं

9. बाबा आत्मा सिंह पर से प्रेत आत्मा का प्रभाव हटाना

हमारे गांव में बाबा आत्मा सिंह जी महाराज जी के पुराने सत्संगी थे। उन्होंने एक बार मुझे हजूर महाराज से नाम लेने के समय की घटना बताई कि नाम लेने से पहले उन पर किसी पराई आत्मा का साया रहता था। बड़े-बड़े सियानों को जो यह असर दूर करने आते थे मैं अकसर पीट कर भगा दिया करता था। यह सब उस पराई आत्मा की शक्ति थी, मुझे इसके बारे में कुछ पता नहीं चलता था। हजूर महाराज ने नाम लेने के लिए संगत में बिठाया। सिमरन याद करवाया गया और भजन पर बिठाया। उसी समय ख्याल आया कि जैसे ही उस पराई आत्मा का असर मुझ पर पड़ेगा तो मुझे लगता है कि यहां कोई भी नहीं रुकेगा और सारी संगत भाग खड़ी होगी। जैसे ही आंखें बंद कर के मैंने बैठना शुरू किया तो उस पराई आत्मा का असर शुरू हुआ, हजूर महाराज जो सामने बैठे थे, एक दम उठ कर मेरी तरफ आये और मेरे सिर पर अपना पवित्र हाथ रख दिया। उसी समय उस पराई आत्मा का असर सदा के लिए खत्म हो गया और फिर कभी मुझे इस बारे में दिक्कत पेश नहीं आई। यह है हजूर महाराज की दया मेहर का करिश्मा।

10. मेरी सास श्रीमती बंत कौर की मृत्यु के बाद कार दुर्घटना से बचाव

मेरी सास श्रीमती बंत कौर आखिरी समय ज्यादा ही बीमार हो गई थीं तथा इलाज के लिए अपने बड़े लड़के श्री सुखदेव सिंह के पास पंचकूला में रहती थीं जहां एक दिन उन का देहांत हो गया। उन्होंने हजूर महाराज से नाम लिया हुआ था। रात को संदेशा आने पर हम कार में उनके पार्थिव शरीर को ले कर उन के गांव भगवानपुर की तरफ जा रहे थे कि रास्ते में अचानक ही कार का एक पूरा पहिया निकल कर साईड में जा गिरा और कार काफी दूर तक तीन पहियों पर घिसटती रही जब कि ऐसी हालत में कार के पलटने की पूरी संभावना होती है। यह हजूर की दया मेहर है कि हजूर महाराज ने उस कार को उलटने से बचा लिया और हम में से किसी को एक खरोंच तक न आने दी।

11. बैलों द्वारा पानी के कुएं में गिरा दिए जाने पर छोटे बच्चे का बचाव

हजूर महाराज नाम-दान से पहले भी अपने जीवों की संभाल करते हैं। ऐसी ही एक घटना दास के साथ बीती। दास तब चार-पांच साल का ही था। मुझे थोड़ी-थोड़ी होश है। मेरे चाचा जी बैलों से कुएं पर रहट (हल्ट) चला रहे थे कि अचानक कुएं के पास खड़े हुए मुझे बैल ने सींगों से उठा कर कुएं में फैंक दिया। थोड़ी देर बाद जैसे ही चाचा जी को इस बात का पता चला तो उन्होंने दूर खेत में पानी लगा रहे मेरे दादा जी को ऊंची आवाज़ दी। दादा जी भागते हुए आये और कपड़ों समेत कुएं में छलांग लगा दी। मुझे पकड़ कर बाहर लाये। मैं बिल्कुल ठीक-ठाक था तथा मेरे दादा जी को भी कोई चोट नहीं आई। मुझे पेट से पानी निकालने के लिए उलटा लिटाने की कोशिश की गई

परन्तु कोई पानी नहीं निकला तथा मैंने बताया कि मैं बिल्कुल ठीक-ठाक हूँ। यदि उस समय बचपन में हजूर संभाल न करते तो मेरी बचपन में ही जीवन लीला समाप्त हो जाती तथा बाद में नाम दान मिलने की संभावना ही खत्म हो जाती।

ये सब हजूर द्वारा संभाल की सच्ची बीती घटनाएं हैं। ये कोई नावल, अफसाने या मनगढ़ंत कहानियां नहीं, असल हड्ड-बीते वाकेयात हैं जो दास के साथ गुज़रे या दास जिनसे संबंधित रहा। कोशिश यही की गई है कि सारा हाल सही सही पेश किया जाये, कोई चीज़ बढ़ाई या घटाई न जाये परन्तु फिर भी किसी ना समझी के कारण असल बीती बात से कोई फर्क भूल भुलेखे में पड़ गया हो तो दास हजूर महाराज जी तथा सारी संगत से क्षमा याचना करता है।

शमशेर सिंह लौंगिया
रिटायर्ड मकैनीकल इंजीनियर
प्रधान, कृपाल रूहानी सत्संग सभा (भबात)

1. रेलगाड़ी में छूट गए अटैची का सही सलामत मिलना

बात उन दिनों की है जब 1970 – 71 में मानव केंद्र, देहरादून में सेवा का काम चल रहा था। हमारे गाँव से बहुत से सत्संगी भाई भी सेवा में जा रहे थे। हजूर की दया से मुझे भी इस सेवा में जाने का मौका मिला। मैं गाँव के बुजुर्ग सत्संगी भाई आत्मा सिंह (जिन को मैं ताया जी कहता था) के साथ जीरकपुर से बस में अम्बाला शहर पहुंच गया। वहां से हम रेलगाड़ी की सहारनपुर की टिकटें लेकर ट्रेन में बैठ गए। रास्ते में हम अम्बाला छावनी से दूसरी गाड़ी बदल कर हम सहारनपुर पहुँच गए। वहां गाड़ी से नीचे उतर कर जब सामान चैक किया तो मेरा चमड़े का अटैची जिसमें कपड़े और जरूरी सामान था, नहीं था। मैं तुरन्त भाग कर स्टेशन मास्टर के पास पहुँचा। उससे निवेदन किया कि मेरा अटैची पहली गाड़ी में अम्बाला छावनी रह गया है। क्या आप इस को प्राप्त करने में मेरी कोई सहायता कर सकते हैं? सब सुन कर स्टेशन मास्टर बोला, "आपके अटैची के मिलने की संभावाना तो कम है, फिर भी अगर आप दूसरी गाड़ी से वापस अंबाला छावनी जाकर पता करो तो शायद मिल जाए।" जब मैं स्टेशन मास्टर के कमरे से निकला तो अचानक मेरे अंदर ख्याल आया कि महापुरुषों का कथन है:

साध को मिलने जाइए, साथ न लीजे कोय।
पाछे पाँव न दीजिए, आगे होय सो होय ।।

यह सोचकर मैंने देहरादून ही जाने का विचार बनाया। मन में ख्याल आया कि शायद यह किसी का देना होगा, सो चला गया।

वहाँ से हम देहरादून बस स्टाप पर पहुँचे। बस आने में देरी थी। लाईन लगी हुई थी। लाईन में खड़े-खड़े मन में ख्याल आया कि महाराज जी के वचन हैं कि जहाँ तक आपका दिल-दिमाग काम करता है करो, बाकी गुरु पावर पर छोड़ दो। विचार बना कि अम्बाला छावनी स्टेशन मास्टर को चिट्ठी लिख दी जाए। यह सोचकर मैंने ताया जी को लाईन में लगा दिया और खुद डाकखाने पहुँच कर स्टेशन मास्टर तथा L.P.O. आफिस (Lost Property Office) अम्बाला छावनी को पत्र लिख दिए। फिर जब मैं देहरादून वाले बस स्टाप पर पहुँचा तो ताया जी भी बस पकड़ कर देहरादून के लिए सामान समेत जा चुके थे। कुछ घबराहट के बाद मैंने दूसरी बस पकड़ी और खाली हाथ मानव केन्द्र, देहरादून पहुँच गया। मानव केंद्र में जाते ही देखा कि सामने बरामदे में हजूर महाराज कुर्सी पर विराजमान हैं। मैंने पहले ही फैसला कर लिया था कि हम महाराज जी को परमात्मा मानते हैं, मैं उनको अटैची के बारे में कुछ नहीं बताऊंगा। महाराज जी के नजदीक गया तो उन्होंने फरमाया, "हां भई जवान, कहां से आये हो?" इन वचनों से मुझे अजीब सी चार्जिंग मिली जो बयान से बाहर है। मैंने हजूर के चरण स्पर्श करके नमस्कार किया और अर्ज की, "महाराज जी, मैं चण्डीगढ़ से आया हूँ।" महाराज जी ने फरमाया, "उस तरफ चेत सिंह के साथ चण्डीगढ़ की संगत है, आप वहां चले जाओ।" वहाँ जाकर

देखा कि बाकी सामान समेत ताया जी भी पहुँच चुके थे। मैंने उन से कहा कि अटैची के बारे में किसी से बात मत करना। 12 – 13 दिन वहां सेवा में बहुत ही आनंद और शान्ति की प्राप्ति हुई। सेवा के समय मैं अपने गाँव के ही सत्संगी भाई कौर चन्द के कपड़े पहनता रहा। सेवा के समय में महाराज जी के अकसर खुले दर्शन हुआ करते थे तथा सब सेवा करने वालों को कई बार वे खुद भुने चने तथा गुड़ का प्रशाद बाँटते थे। 12 – 13 दिन के बाद मेरी छुट्टी खत्म हो गई। मैंने महाराज जी को प्रार्थना की, "हजूर मेरी छुट्टी खत्म हो गई है, मैं जाना चाहता हूँ।" हजूर ने प्रशाद दिया और फरमाया, "आप बड़ी खुशी से जा सकते हैं।" मैं और कौर चन्द दोनों बस से वापस सहारनपुर पहुँच गए जब कि ताया जी और सेवा करने के लिए वहीं रुक गए। सहारनपुर आकर मैंने अपनी गुम हुई अटैची से मिलती – जुलती अटैची खरीद ली ताकि घर में मुझे कोई यह न कह सके कि आप अपने गुरु के पास गए थे और अटैची गुम करके चले आए। सहारनपुर से चल कर जब मैं और कौर चन्द अम्बाला छावनी स्टेशन पर पहुँचे तो एक दम मन में आया कि महाराज जी का कथन है कि अपने हाथों, पैरों और दिमाग से पूरा काम लो, बाकी गुरु – पावर पर छोड़ दो। यह ख्याल आते ही मैं एक कमरे में चला गया जहाँ एक अफसर और 8 – 10 कर्मचारी काम कर रहे थे। अन्दर जाते ही उस अफसर ने मुझ से कहा कि आप अन्दर कैसे आए हो। मैंने प्रार्थना की कि फलां तारीख को मैंने यहां पर गाड़ी बदली थी और मेरी अटैची पहली गाड़ी में रह गई थी। जैसे – जैसे मैं बोलता जाता वह अफसर मेरी तरफ गौर से देखता जाता। आखिरकार वह उठकर खड़ा हो गया और मुझे कहने लगा, "सरदार जी, आप का अटैची तो मेरे पास है परन्तु यह बताइए कि आप को मेरे पास भेजा

किस ने है और आप मेरे ही पास कैसे पहुंच गए? आप ने बाहर बोर्ड पर पढ़ा होगा कि हम तो गाड़ियों के सफाई इंचार्ज हैं।" उसने पूछा कि आप उस दिन जा कहां रहे थे। मैंने कहा कि मैं सन्तों के पास जा रहा था। उस ने एक दम शोर मचा दिया कि वे तो वास्तव में बहुत बड़े सन्त हैं, यह उनकी ही करामात है कि आप का अटैची बच गया और उस शक्ति ने आप को मेरे पास भेज दिया। उसने कहा कि पहले आप चाय पियो, फिर अटैची दूँगा। मेरे मना करने के बावजूद भी उस ने जबरदस्ती चाय पिलाई तथा समोसे खिलाए। फिर उसने मुझे बताया कि आपका अटैची गाड़ी में दरवाजे के सामने ऊपर अन्दर रखा हुआ था। पहले तो सवारियां सामान नहीं छोड़तीं। अगर वे छोड़ दें तो कुली नहीं छोड़ते। यदि कोई दूसरा आदमी उठा लेता तो वह अगर ईमानदार भी होता तो L.P.O. दफ्तर में जमा करवा देता जहाँ आप का आधा सामान निकल जाता और 2 रुपए प्रतिदिन जुर्माना होता। मेरी ड्यूटी गाड़ियों की धुलाई के बाद सफाई चैक करने की है। वह अटैची सफाई कर्मचारियों को पता नहीं क्यों नजर नहीं आया। लगता है उन सन्तों ने सबकी आँखें बंद कर दी थीं। जब मैं चैकिंग करने गया तो सबसे पहले उसी डिब्बे में पहुँचा। तब सामने दरवाजे से ही मुझे आपका अटैची नज़र पड़ा। मैं अचानक घबरा गया कि गाड़ी में किसी ने बम रखा है क्योंकि उस समय पाकिस्तान के साथ युद्ध चल रहा था । वह अफसर तुरंत स्टेशन सुपरिंटैंडैंट के पास पहुँचा। उन को लाकर मौका दिखाया। वह भी नेक इन्सान है। वह कहने लगा कि इसको चैक करो, मुझे तो किसी गरीब आदमी का लगता है, इसमें बम वगैरह नहीं होगा। चैक करने पर जब सारा शक मिट गया तो उसने कहा कि आप इसे अपने पास रख लो। मैंने कहा कि मुझे रखने की अथारिटी नहीं है। फिर उस अटैची को

स्टेशन सुपरिटैंडैंट साथ ले गया और अब उनकी अलमारी में पड़ी है, चलो मैं आपको अभी दिलवा देता हूँ। वहाँ गए तो पता चला कि स्टेशन सुपरिटैंडैंट आज छुट्टी पर है। उसके घर फोन करने पर पता चला कि वह पटियाला गया हुआ है। फिर उस अफसर ने मुझे कहा कि आप कल मेरे पास आकर मुझ से ले जाना। अगले दिन उस अफसर ने अटैची लाकर मेरे हवाले कर दिया। अटैची से एक पैसे की चीज़ भी गायब न थी।

2 <u>दिल्ली में अनजाने स्थान पर बस से उतरे अकेले अनपढ़ बुजुर्ग बाबू सिंह को सही सलामत आश्रम पहुंचाना</u>

एक बार हम महाराज जी के दर्शनों के लिए सावन आश्रम, दिल्ली पहुँचे। साथ 70-75 वर्ष के एक बुजुर्ग बाबू सिंह जी भी थे। शाम का सत्संग सुना। उस के बाद घोषणा हुई कि कल सुबह का सत्संग रामलीला ग्राऊंड में होगा। इस लिए दूसरे दिन बस द्वारा हम रामलीला मैदान में पहुँचे तथा वहां सारे कार्यक्रम का आनंद लिया। शाम को सत्संग की समाप्ति के बाद जब हम भबात वाले सत्संगी इकट्ठे हुए तो बाबू सिंह जी नज़र न आए। मैंने स्टेज से बार बार घोषणा करवाई कि बाबू सिंह जी भबात वाले जहां भी हों स्टेज पर आ जाएं परन्तु वे नहीं आए। इससे हम सब को बहुत चिंता होने लगी क्योंकि वे अनपढ़ बुजुर्ग थे तथा मोटा चश्मा लगाते थे। और तो और उन्होंने गुम होने के डर से अपने पास से सारे पैसे दिल्ली पहुँचते ही मुझे दे दिए थे। जब उन का कुछ पता न चला फिर हम यह सोच कर आश्रम चले आए कि हो सकता है कि बाबू सिंह जी आश्रम पहुंच गए हों। आश्रम पहुंच कर फिर भी बाबू सिंह जी के बारे में घोषणा करवाई लेकिन उनका

कोई पता न चला। हमारे गाँव के ही सत्संगी भाई राम चन्द जी जो समय मिलते ही अकसर सेवा में लग जाते हैं, आश्रम में पहुँच कर संगत के लिए विभिन्न स्थानों पर दरियां ढोने में लग गए। जब राम चन्द जी घूमते हुए साथ वाले स्कूल में, जहां पर कि संगत के ठहरने के लिए जगह बनाई हुई थी, पहुंचे तो पाया कि बाबू सिंह जी स्कूल में आए बैठे हैं। राम चन्द जी ने बताया कि मैंने उनको पूछा कि आप कहां चले गए थे, हम बहुत परेशान हो रहे थे तो बाबू सिंह जी बोले कि भाई राम चन्द, हमारा गुरु तो सच में भगवान है और यह कह कर रोने लग गए। उन्होंने (बाबू सिंह जी) ने अपनी आप बीती ऐसे सुनाई कि जब हम बस में जा रहे थे तो मैं अधिक भीड़ के कारण ठीक से बस के अंदर न हो सका और खिड़की के पास ही खड़ा हो गया। पाँच-छः किलोमीटर चल कर जब बस रुकी और सवारियाँ उतरीं तो मुझे महसूस हुआ कि राम चन्द जी भी अगली खिड़की से उतर गए हैं। इसी भुलेखे में मैं पिछले दरवाजे से उतर गया और बस चल पड़ी। उतर कर देखा कि सब यात्री चले गए हैं और परंतु राम चन्द जी तो क्या वहां पर हमारा कोई भी सत्संगी भाई नहीं था। यह देख कर मैं एकदम घबरा गया और मेरा पसीना छूट गया। सड़क से ज़रा पीछे हटकर मैंने प्रार्थना की कि हे सत्गुरु, लोग आपको भगवान मानते हैं, यदि आप सच में भगवान हैं तो मुझे अपने आश्रम पहुँचा दो। उसने बताया कि न तो मुझे अपने आश्रम का नाम याद था और न ही आगे जाने का पता मालूम था। प्रार्थना करने के बाद मैंने थोड़ा सा सूरज का हिसाब लगाया और पैदल चल पड़ा। बहुत सारे मोड़ आए, कई चौराहे आए। जिस तरफ मन में आया, चलता रहा। तकरीबन तीन-साढ़े तीन घण्टे चलने के बाद मैं थक गया और सूरज भी डूबने लगा जिससे मेरा हौसला टूटने लगा।

हजूर की कृपा से उसी समय अचानक मुझे गंदा नाला दिखाई पड़ा जिससे मेरा उत्साह बढ़ गया। मैंने थोड़ी देर बैठ कर आराम किया और कुछ देर बाद पानी के बहाव का हिसाब लगाकर नाले के साथ-साथ चल पड़ा। तकरीबन आधा-पौना किलोमीटर चलने के बाद लाऊड स्पीकर की आवाज सुनाई दी जिस से मुझे राहत महसूस हुई तथा मैं तेजी से चलता हुआ थका-मांदा गुरु कृपा से आश्रम पहुँच गया। यह घटना ब्यान करते समय उसकी आँखों से टप टप आँसू बह रहे थे तथा वह जोर-जोर से कह रहा था कि यह गुरु तो सचमुच में परमात्मा है।

3. <u>बिजली का करंट लग जाने पर बचाव</u>

1966 से हमारे घर में साप्ताहिक सत्संग होने लगा था, गर्मियों में छत पर तथा सर्दियों में कमरे के अंदर। एक दिन सत्संग के समय मेरी पत्नी ने कहा कि मैंने कपड़े आदि बिछा दिए हैं, सत्संग का समय होने वाला है, आप ऊपर लाईट लगा दो। टेबल लैंप के साथ लम्बी तार को प्लग में लगाकर ऊपर जाते समय अचानक मैंने टेबल लैंप का बटन दबा दिया। बीच में स्नानघर गीला था। बटन दबाते ही मुझे बिजली ने पकड़ लिया। छुटने की बहुत कोशिश की लेकिन सफल न हो सका। एकदम मेरे मन में ख्याल आया कि अब अंत आ गया है, दुनिया का ख्याल छोड़ कर सिमरन करो। इस तरह सिमरन शुरू हो गया। यह सारा क्रम बहुत तेजी से हुआ। बाद में मुझे बताया गया कि सिमरन शुरू होते ही मैं फौरन बिजली से छुट कर बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। यह खबर सारे गांव में फैल गई। कहते हैं कि मुझे ऊपर छत पर लेकर गए और वहां जोर से मालिश की गई लेकिन मुझे होश न आया। उन दिनों हमारे गांव में कोई कार नहीं थी। महाराज जी की

कृपा से उसी समय गांव में शादी की बारात में एक कार आ गई जिस का ड्राइवर मेरे पास पढ़ा हुआ था। खबर मिलते ही वह तुरन्त कार लेकर आ गया और झट से कहने लगा कि इन को उठा कर मेरी गाड़ी में अस्पताल ले चलो। सब हैरान थे कि यह गाड़ी अपने आप कैसे आ गई। उसने फौरन मुझे कार में लेकर अस्पताल में दाखिल करवा दिया। काफी उपचार के बाद वहां मुझे होश आ गया और 10-15 दिन के इलाज के बाद हजूर की दया से मैं सही-सलामत घर वापस आ गया। इस घटना का पत्र राम चन्द जी ने महाराज जी को लिख दिया। उत्तर में महाराज जी का 17-7-1968 का लिखा हुआ पत्र हमें प्राप्त हुआ जिस में लिखा था:-

"प्यारे राम चन्द जी,

आपका प्रेम पत्र मिला और हाल मालूम हुआ। सत्गुरु अपने हरेक जीव के अंग संग हैं और मुनासिब संभाल करते हैं। हमें दुख हुआ कि शमशेर सिंह जी को बिजली का शार्ट लगा है और सत्गुरु की दया से अब ठीक हो गये हैं। मेरी तरफ से उनको प्यार पहुँचे। मेरी ओर से सारी संगत को भी प्यार पहुँचे। सब को ताकीद है कि भजन सिमरन को समय दो, अंदर से मदद मिलेगी। प्रेम-प्यार से भजन को वक्त देते रहो। सत्गुरु ताकत अंग संग होकर मुनासिब संभाल कर रही है।"

यह पत्र अब भी मेरे पास सत्कार के साथ रखा हुआ है। कभी मन उदास होता है तो इसको पढ़कर मेरे मन को बहुत शांति मिलती है।